Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
D.B. College Jaynagar
Dept. of Psychology.

Study Material
B.A. Part-I-(H)
Paper-II
Date-21-4-2020

# पूर्वाग्रह (Prejudice)

पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा अंग्रेजी शब्द 'prejudice' का हिन्दी रुपान्तरण है। 'Prejudice' शब्द लैटिन भाषा के prejudicium से बना है। 'prejudicium' में दो शब्द हैं - 'pre' तथा 'judicium'। pre का अर्थ पहले तथा 'judicium' का अर्थ है judgement शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए तब यह कहा जा सकता है कि prejudice अर्थात पूर्वाग्रह से तात्पर्य व्यक्ति के किसी वस्तु, तथ्य, घटना तथा अन्य व्यक्ति के बारे में एक पूर्व निर्णय से होता है।

समाज मनोविज्ञान में पूर्वाग्रह को भिन्न - भिन्न ढंगो से परिभाषित किया गया है और एरलिक (Ehrlich) के अनुसार समाज मनोवैज्ञानिकों के बीच इसके अर्थ के बारे में अभी तक पूर्ण सहमति नहीं है। कुछ समाज मनोवैज्ञानिक के अनुसार पूर्वाग्रह एक तरह का पूर्वकल्पित विवेकहीन निर्णय (preconcieved irrational judgement) है, कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने इसे किसी धर्म, प्रजाति एवं समूह के प्रति दिखलायी जानेवाली एक तरह की नापसंदगी या घृणा कहा तथा कुछ लोगों ने इसे उपयुक्त व्यवहार (appropriate behavior) के सम्बंध में की किया जाने वाला आदर्शात्मक प्रत्यक्षण (normative percepts) का एक संग्रह (collection) माना है। स्पष्ट है कि पूर्वाग्रह के अर्थ के बारे में समाजमनोवैज्ञानिकों के बीच मतभेद है। इस मतभेद के बावजूद भी अधिकतर समाज मनोवैज्ञानिकों, जिनमें प्रमुख सकर्ड तथा बैकमैन (Secord & backman; 1987) फिशर (Fisher, 1982) क्रेच, क्रचफिल्ड तथा बैलेची (Krech, crutchfield & Ballachey,

1972), फेल्डमैन (feldman, 1985), मेयर्स (Myers) (1987), बैरोन तथा बर्न (Baron and Byrne, 1987) है के बीच इस बात की पूर्ण सहमति है कि पूर्वाग्रह एक तरह की मनोवृत्ति (attitude) है। इन समाज मनोवैज्ञानिकों की परिभाषाओं को देखने से यह स्पष्ट है कि इन लोगों ने पूर्वाग्रह को किसी वस्तु या अन्य व्यक्ति के प्रति एक तरह की मनोवृत्ति माना है। उदाहरण के रूप में कुछ परिभाषाओं को अब हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं —

सेकर्ड तथा बैकमैन (Second and Backman, 1974) के अनुसार, पूर्वाग्रह एक मनोवृत्ति है जो व्यक्ति के किसी समूह को या इसके सदस्यों के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल ढंगों से सोचने, प्रत्यक्षण करने, अनुभव करने तथा क्रिया करने के लिए पहले ही तत्पर बना देती है।

फेल्डमैन[2] (feldman, 1985) के अनुसार, किसी समूह के सदस्यों के प्रति ऐसी स्वीकारात्मक निर्णय या मूल्यांकन को पूर्वाग्रह कहा जाता है जो मुख्यतः उस समूह की सदस्यता पर आधारित होता है ना कि सदस्यों के विशेष गुणों पर।"

1. 'prejudice' is an attitude that predisposes a person to think preceive, feel and act in favourable and unfabourable ways towords a group of its individual Members.

— Second & bacman: social physchology 1947

2. prejudice refers to positive or negative evaluations or judgements of members of a particular group which are based primerly on the fact of their Membership in the group and not necessarly because of particular characteristics of individual Members.

— feldman: social physchology, 1985, p. 169

बरोन तथा बर्न (Baron and Byrne, 1977) के अनुसार, "समाज मनोविज्ञान में पूर्वाग्रह को सामान्यतः किसी प्रजातीय, मानवजातीय या धार्मिक समूह के सदस्यों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है।"

मेयर्स (Myers 1987) के अनुसार, "पूर्वाग्रह किसी समूह का एवं उसकी सदस्यों के प्रति एक अनुचित नकारात्मक मनोवृत्ति को कहा जाता है।"

पूर्वाग्रह की ऊपर दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजमनोवैज्ञानिकों ने पूर्वाग्रह को एक तरह की मनोवृत्ति माना है। परन्तु कुछ लोगों ने इसे स्वीकारात्मक मनोवृत्ति (positive attitude) माना है। जैसे बैरान तथा बर्न और मेयर्स ने सिर्फ नाकारात्मक मनोवृत्ति (negative attitude) माना है। जैसे बैरान तथा बर्न मनोवृत्ति के अलावा स्वीकारात्मक (positive) भी माना है। जबकि सेकर्ड तथा बेकमैन और फेल्डमैन ने इसे नाकारात्मक होने पर व्यक्ति दूसरे समूह के सदस्यों के प्रति घृणा दिखलाता है एवं विवेकहीन विचारों को व्यक्त करता है। स्वीकारात्मक मनोवृत्ति के रूप में पूर्वाग्रह होने पर व्यक्ति दूसरे समूह के प्रति अत्यधिक स्नेह उदाहरणार्थ, यदि कोई प्रोफेसर अपने किसी छात्र के प्रति स्वीकारात्मक रूप में पूर्वाग्रहित (positive) के प्रति स्नेह, प्यार एवं विवेकपूर्ण विचार बनाये रखते हैं। उसी तरह से नाकारात्मक मनोवृत्ति के रूप में पूर्वाग्रह का एक उदाहरण इस प्रकार किया जा सकता है— भारतीय समाज में हरिजनों के प्रति उच्च जाति के लोग प्रायः नाकारात्मक रूप से पूर्वाग्रहित होते हैं। यही कारण है कि वे प्रायः हरिजनों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं तथा उसके प्रति अधिक भेदभाव व्यक्त रखते हैं। पूर्वाग्रह का अधिकतर प्रयोग इस मनोवृत्ति के ही संदर्भ में किया जाता है, पूर्वाग्रह स्वीकारात्मक हो चाहे नाकारात्मक यह एक मनोवृत्ति है और होने के नाते इसमें मनोवृत्ति के तीनों संघटक (components) अर्थात संज्ञानात्मक संघटक (cognitive component) मौजूद होते हैं।

"Prejudice is generally defined, in social physchology, as a negative attitude toward the members of some social, ethnic or religious group".

— Baron & Byrne: social physchology 1977.

2. Prejudice is an unjustifiable negative attitude towards a group and its individual members.

— Myers: Social Psychology: 1987.

ऊपर किये गये वर्णनों से यह स्पष्ट है कि पूर्वाग्रह (Prejudice) के बारे में समाज मनोवैज्ञानिकों के विभिन्नता होने के बावजूद भी इसका प्रयोग एक समान्य ढंग से किया गया है। ऊपर से किये गये वर्णन के आधार पर हमें पूर्वाग्रह के बारे में मूलतः निम्नांकित तथ्य मिलते हैं —

1. पूर्वाग्रह एक तरह की मनोवृत्ति है कि जो तथ्यों (facts) पर आधारित नहीं होता है।
2. पूर्वाग्रह को कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने इसका प्रयोग नाकारात्मक मनोवृत्ति के रूप में ही किया है परन्तु कुछ समाज मनोवैज्ञानिक ने इसे नाकारात्मक मनोवृत्ति के अलावा स्वीकारात्मक मनोवृत्ति के रूप में भी किया गया है।
3. पूर्वाग्रह चाहे स्वीकारात्मक हो या नाकारात्मक हो, इसमें मनोवृत्ति के तीनों संघटक (components) अर्थात संज्ञानात्मक संघटक (cognitive component), भावात्मक संघटक (affective component) तथा व्यवहारात्मक संघटक (behavioral component) पाये जाते हैं।
4. पूर्वाग्रह के संज्ञानात्मक संघटक की अभिव्यक्ति रूढ़िवृत्तियों (stereotypes) के रूप में होती है।
5. पूर्वाग्रह के संज्ञानात्मक या भावात्मक संघटक के रूप में घृणा एवं विद्वेष की भावना होती है।
6. पूर्वाग्रह के व्यवहारात्मक संघटक के रूप में व्यक्ति पूर्वाग्रहित (prejudiced) समूहों या व्यक्तियों के प्रति विभेद, अलगाव (segregation) तथा अन्य अप्रिय व्यवहारों दिखलाता है।
7. इस तरह से पूर्वाग्रह का प्रभाव व्यक्ति के चिन्तन, प्रत्यक्षण, भाव एवं व्यवहार सभी पर पड़ता है।

Scanned with CamScanner